Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 5.886|
Vol. 08 Issue 03, March- 2013
Available online at: https://livejimrjournal.in/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

"किशोरियों के व्यक्तित्व विकास पर फैशन की प्रभावशीलता का अध्ययन"

श्रीमती माधुरी पाल
प्रवक्ता गृह विज्ञान
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय कांधला, शामली (उत्तर प्रदेश)

सारांश- वर्तमान समय में किशोरियों के जीवन में फैशन बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा है।फैशन किशोरियों के सामाजिक एवं व्यक्तित्व विकास पर प्रत्यक्ष रूप से प्रभाव डालता है। फैशन केवल आभूषण,वस्त्र या सौंदर्य प्रसाधन की वस्तुओं तक सीमित नहीं है बल्कि इसके माध्यम से आत्म अभिव्यक्ति, सामाजिक पहचान तथा आत्मविश्वास को भी विकसित किया जा सकता है।किशोरावस्था की बालिकाएं अपनी पहचान स्थापित करने के लिए, अपने व्यक्तित्व को आकर्षित प्रदर्शित करने के लिए या सामाजिक स्वीकृति प्राप्त करने के लिए तथा व्यक्तित्व को विकसित करने के लिए भी फैशन को अपनाती हैं।फैशन से आत्मविश्वास में वृद्धि के साथ-साथ रचनात्मक का भी विकास होता है।फैशन से सामाजिक तथा कौशल विकास में सुधार होता है।फैशन किशोरियों को समूह में सहभागिता करना,मित्रता करना,सामाजिक अनुकूलन करना एवं आत्म अभिव्यक्ति का हुनर सिखाता है। यह सभी क्रियाएं फैशन के सकारात्मक प्रभाव को प्रदर्शित करती हैं।सोशल मीडिया, फैशन इंडस्ट्री तथा विभिन्न प्रकार के विज्ञापनों के माध्यम से किशोरियों के मन में फैशन से प्रभावित होने की चेतना जागृत होती है। किशोरियों के द्वारा फैशन को केवल बाहरी प्रदर्शनी का माध्यम ना मानकर संतुलित साधन, बेहतरीन विकास एवं सामाजिक सशक्तिकरण के रूप में अपनाना चाहिए।इस प्रक्रिया में परिवार, विद्यालय, समाज तथा माता-पिता किशोरियों के मार्गदर्शक बनकर सकारात्मक भूमिका निभा सकते हैं।

मुख्य शब्द – फैशन, किशोरावस्था, व्यक्तित्व, समाज,

प्रस्तावना - वर्तमान युग में फैशन को केवल आधुनिक वस्त्रों को धारण करना ही नहीं समझना चाहिए।फैशन व्यक्ति के व्यक्तित्व,आत्मविश्वास,आत्म अभिव्यक्ति एवं सामाजिक पहचान का एक महत्वपूर्ण भाग बन गई है।विशेष रूप से यदि किशोरावस्था की युवतियों पर ध्यान केंद्रित किया जाए तो वह इस अवस्था में शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं भावनात्मक परिवर्तन से गुजर रही होती है। इस आयु में वह स्वयं को दूसरों के बीच में अपनी पहचान बनाने या स्वयं को समाज के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए फैशन के माध्यम का सहारा लेती है। फैशन से किशोरावस्था की उम्र बहुत अधिक प्रभावित होती है। फैशन का किशोरियों के विकास पर सामाजिक एवं नकारात्मक दोनों ही प्रकार का प्रभाव देखा जा सकता है। फैशन का संबंध केवल आधुनिक कपड़ों,सौंदर्य प्रसाधनों,आलीशान तथा वैभवशाली वस्तुओं से

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 5.886|
Vol. 08 Issue 03, March- 2013
Available online at: https://livejimrjournal.in/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

नहीं होता है,बल्कि इसमें व्यक्ति का पहनावा, आभूषण,शारीरिक प्रस्तुति,व्यवहार शीलता, केश अलंकरण तथा व्यक्ति की जीवन शैली को भी सम्मिलित किया जाता है।वर्तमान समय में सोशल मीडिया,विज्ञापन,फैशन इंडस्ट्री, सेलिब्रिटीज,फिल्में इत्यादि के माध्यम से किशोरियां फैशन को चुनती है तथा उससे प्रभावित भी होती हैं। फैशन किशोरियों को सामाजिक,मानसिक एवं व्यक्तिगत रूप से प्रभावित करती है। फैशन का प्रभाव सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही पहलुओं को प्रभावित करता है। फैशन आत्मविश्वास, सामाजिक अनुकूलन एवं रचनात्मकता को बढ़ाने में सहायक होता है,परंतु फैशन के प्रति अत्यधिक झुकाव का होना मानसिक तनाव,सामाजिक तुलना,एवं हीन भावना को भी जन्म दे सकता है।

फैशन- वर्तमान समय में फैशन मानव जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है । फैशन को वस्त्र पहनने तक या चुनने तक सीमित नहीं किया जा सकता है। इसमें कपड़ों के चयन से लेकर सांस्कृतिक अभिरुचियों तथा कलात्मक प्रस्तुतीकरण तक अनेक तत्वों तक सम्मलित किया जाता है। फैशन के माध्यम से व्यक्ति का व्यक्तित्व,विचारधारा,परिपेक्ष्य और प्राथमिकताओं को नि:शब्द रूप में दुनिया के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रबल माध्यम है।फैशन एक निरंतर परिवर्तनशील प्रक्रिया है। यह चक्र के रूप में निरंतर चलती रहती है।मनुष्य की नवीनता एवं परिवर्तनशीलता की इच्छा के कारण फैशन की प्रवृत्ति,आकर्षक व दिलचस्पी परिवर्तित होती रहती है,जो वर्तमान का आकर्षण है वह भविष्य में बदल जाता है तत्पश्चात भविष्य में फिर से वही आकर्षण पुनः चलन में आ जाता है।फैशन को व्यक्तिगत पसंद के दायरे में नहीं रखा जा सकता क्योंकि फैशन संस्कृति, इतिहास,सामाजिक स्तर, रहन-सहन, सामाजिक परिवेश एवं कलाओं का सजीव चित्रण प्रदर्शित करती है।फैशन के माध्यम से किसी विशेष सामाजिक समूह या समुदाय की विशेषता की पहचान की जा सकती है। फैशन का सांस्कृतिक,कलात्मक एवं सामाजिक प्रभाव भी होता है।भारत में विभिन्न राज्यों,समुदायों तथा क्षेत्रों की अपनी विशिष्ट वेशभूषा,विशेष आभूषण,केश सज्जा,परम्पराएं आदि फैशन तथा संस्कृति का सुन्दर समावेश प्रस्तुत करते हैं । राजस्थान की घाघरा-चोली, लखनऊ का चिकनकारी वस्त्र,पंजाब का सलवार सूट, बनारसी साड़ियाँ,बंगाल की साड़ी,दक्षिण की कांजीवरम साड़ियाँ,कश्मीरी शॉल जैसे भारतीय परिधानों से फैशन तथा पारम्परिकता का आधुनिक समन्वय दृष्टिगतहोता है।फैशन उपभोक्ता की चेतना को प्रोत्साहित करता है। फैशन को संचार प्रक्रिया का प्रभावशाली तरीका भी माना जा सकता है। फैशन के माध्यम से मनुष्य अपनी प्रभावशीलता,मूल्यों का प्रदर्शन एवं आदान-प्रदान,पहचान प्रदर्शन तथा विभिन्न सामाजिक मुद्दों को समाज के सामने रखता है।फैशन समाज के ऐतिहासिक,सामाजिक एवं सांस्कृतिक

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 5.886|
Vol. 08 Issue 03, March- 2013
Available online at: https://livejimrjournal.in/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

परिवर्तनों को निरंतर समय के विकास के साथ-साथ प्रकट करता रहता है। फैशन को समाज के आइने के रूप में देख सकते हैं।

फैशन का संबंध केवल बाहरी सजावट तथा सौंदर्य से नहीं होता है यह व्यक्ति के आत्मविश्वास एवं सामाजिकता प्रभावित करता है।विभिन्न प्रकार के अवसरों के अनुरूप एवं उपयुक्त शारीरिक बनावट के अनुसार वस्त्रों का चयन करना एवं धारण करना मनुष्य में आत्मविश्वास उत्पन्न करता है। वर्तमान समय में किशोर एवं किशोरियों में फैशन के प्रति अधिक आकर्षक देखने को मिल रहा है।वह फैशन के माध्यम से स्वयं को आत्मविश्वासी, सामाजिक रूप से मजबूत एवं आधुनिक होने का प्रयास करते हैं।युवाओं में वर्तमान समय में प्रचलित विभिन्न प्रकार के वस्त्र,आभूषण अन्य श्रंगार सामग्री को उपयोग में लाना तथा धारण करना उनको सामाजिक परिस्थितियों के साथ सहजता प्रदान करता है। वह स्वयं को आधुनिक समय के साथ आगे बढ़ता हुआ महसूस करते हैं जिससे उनमें आत्मविश्वास जागृत होता है। फैशन को यदि संतुलित,मर्यादित एवं विवेकपूर्ण तरीके से अपनाया जाए तो यह व्यक्तित्व विकास एवं सामाजिक उन्नति में प्रभावशाली हो सकती है। वर्तमान समय में फैशन का औद्योगीकरण पूरे विश्व स्तर पर बहुत ही अधिक तेजी से विस्तारित हो रहा है। फैशन डिजाइनिंग,वस्त्र निर्माण,मॉडलिंग,टेक्सटाइल, ई-कॉमर्स,ब्यूटी इंडस्ट्री आदि क्षेत्र में बहुत योगदान दे रही है। फैशन उद्योग से लोगों को रोजगार भी प्राप्त हो रहा है। परिधान डिजाइनिंग मेकअप आर्टिस्ट,फैशन डिजाइनर,फैशन ब्लॉगर,टेक्सटाइल स्पेशलिस्ट,मॉडल,स्टाइलिस्ट इत्यादि क्षेत्रों में लोगों को व्यवसाय प्राप्त हो रहा है।तकनीकी विकास के कारण फैशन नई दिशा की ओर निरंतर बढ़ता जा रहा है। इंटरनेट एवं सोशल मीडिया के माध्यम से नवीन फैशन ट्रेंड्स वैश्विक स्तर पर बहुत ही शीघ्रता से प्रसारित हो जाते हैं। विभिन्न प्रकार के विज्ञापन,यूट्यूब चैनल,इंस्टाग्राम,फेसबुक जैसे विभिन्न प्रकार के प्लेटफार्म के माध्यम से भी फैशन का प्रचार प्रसार बहुत ही आसानी एवं शीघ्रता से हो जाता है। फैशन इनफ्लुएंसर,ब्लॉगर्स एवं सेलिब्रिटीज के माध्यम से नए फैशन ट्रेंड की जानकारी अधिकतर युवाओं एवं किशोरियों के मध्य पहुंच जाती है।किशोर एवं किशोरिययां अपनी पसंद एवं सुविधा के अनुसार चयन करते तथा अपनाते हैं।

किशोरावस्था- किशोरावस्था व्यक्ति के जीवन की एक महत्वपूर्ण अवस्था होती है। किशोरावस्था को विकास की एक क्रांतिकारी एवं समस्या बाहुल्य की अवस्था भी कहा जाता है।किशोरावस्था में व्यक्ति के जीवन में शारीरिक, मानसिक, सामाजिक,मनोवैज्ञानिक परिवर्तन होते हैं तथा विकास परिपक्वता को

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 5.886|
Vol. 08 Issue 03, March- 2013
Available online at: https://livejimrjournal.in/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

प्राप्त करता है।मनोवैज्ञानिकों के अनुसार इस अवस्था को मानव जीवन का विस्तार काल (Age of Span) **कहते हैं।**

ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार "किशोरावस्था से तात्पर्य बालक या बालिकाओं की उस अवस्था जिसमें वह पुरुषत्व या स्त्रीत्व की ओर विकसित हो रहे होते हैं। किशोर के लिए यह अवस्था 14 **से** 25 **वर्ष के मध्य की होती है जबकि किशोरियों के लिए यह अवस्था** 12 **से** 21 **वर्ष तक मानी जाती है।**

समाजशास्त्रीय शब्दकोश के अनुसार "जब मनुष्य बाल्यावस्था से निकलकर वयस्क अवस्था की ओर बढ़ रहा होता है तो उसके मध्य की अवस्था किशोरावस्था कहलाती है।" बाल्यावस्था एवं परिपक्वता के मध्य मानव विकास का समय विकास एवं पूर्ण परिपक्वता के प्रारंभ का समय होता है जिसे सामान्यत: युवावस्था के रूप में जाना जाता है।

आसुवेल के अनुसार "किशोरावस्था जीवन की एक नाजुक अवस्था है जहां बालक का झुकाव जिस दिशा की ओर हो जाता है,वह उसी दिशा में निरंतर आगे बढ़ता जाता है। इस समय बालक में कर्तव्यों, जिम्मेदारियों,अधिकारों, सामाजिक संबंधों में अनेक परिवर्तन आते हैं ऐसी स्थिति में माता- पिता,साथी-समूह और अन्य के प्रति दृष्टिकोण का बदलना अनिवार्य प्रतीत होता है।

किशोरावस्था की शुरुआत को इंगित करना अत्यंत कठिन कार्य है। क्योंकि लैंगिक परिपक्वता प्रत्येक व्यक्ति में अलग-अलग होती है। मानव विकास पर जलवायु, रहन-सहन का स्तर, पोषण इत्यादि का प्रभाव पड़ता है। भारतीय बालक एवं बालिकाओं में परिपक्वता की उम्र12 **से** 21 **वर्ष तक मानी गई है । किशोरावस्था के अंतर्गत शारीरिक परिपक्वता के साथ-साथ भौतिक परिपक्वता, मानसिक, संवेगात्मक,सामाजिक और मनोवैज्ञानिक परिपक्वता का भी अध्ययन किया जाता है। इस अवस्था में विभिन्न प्रकार के परिवर्तन तथा विशेषताओं का समावेश होता हैं जैसे- शारीरिक परिवर्तन,मानसिक परिवर्तन, हार्मोनल परिवर्तन,रुचियों में परिवर्तन, सामाजिक जागरूकता, स्व-पहचान की इच्छा,समूह का महत्त्व,स्वाभिमान तथा आत्म-सम्मान की प्रबल भावना इत्यादि ।**

व्यक्तित्व की परिकल्पना- व्यक्तित्व एक बहुत ही व्यापक शब्द है।इसके अंतर्गत केवल शरीर रचना और शारीरिक गठन को सम्मिलित नहीं किया जा सकता बल्कि इसमें व्यक्ति के समस्त शारीरिक, मानसिक, नैतिक,संवेगात्मकता,व्यावहारिकता और सामाजिक गुणों को सम्मिलित किया जाता है।व्यक्तित्व के अंतर्गत मनुष्य के व्यवहार,स्वभाव,रुचियों,बौद्धिक

क्षमताओं,योग्यताओं,आत्मविश्वास,चारित्रिक गुणों,निर्णय लेने की क्षमता, संवेदनशीलता, सामाजिकता तथा जीवन जीने संबंधी विभिन्न प्रकार के मूल्यों की गणना की जाती है।इन सभी गुणों का प्रभाव भी व्यक्ति के अच्छे, बुरे या प्रभावशाली व्यक्तित्व को निर्मित करता है। व्यक्तित्व व्यक्ति के विकास का एक बहुत अधिक महत्वपूर्ण पहलू है। व्यक्तित्व ही एक ऐसी वस्तु है जिसके कारण व्यक्ति बाहरी रूप से अनेक विशेषताओं में समान होते हुए भी भिन्न परिलक्षित होता है।वर्तमान समय में व्यक्तित्व का मूल्यांकन व्यक्ति के समस्त आंतरिक और बाहरी गुणों के आधार पर किया जाता है।व्यक्तित्व के गुणों के विकास पर वंशानुक्रम और वातावरण तत्वों का बहुत अधिक प्रभाव रहता है। व्यक्तित्व विकास का उद्देश्य किशोरियों को आत्मविश्वासी प्रभावशाली और संतुलित बनाना होता है। व्यक्तित्व विकास के आत्मविश्वास, संवेदनशीलता,नेतृत्व क्षमता, संचार कौशल, सामाजिक अनुकूलन इत्यादि प्रमुख तत्व हैं।

किशोरावस्था एवं फैशन -किशोरियों के जीवन को फैशन बहुत प्रभावशाली ढंग से प्रभावित करती है क्योंकि इस अवस्था में किशोरियां अपनी पहचान,पसंद और व्यक्तित्व को समझने की कोशिश करते हैं हैं। किशोरियों के लिए फैशन आकर्षण बढ़ाने के साथ-साथ आत्मविश्वास बढ़ाने का तरीका भी है। जब वह अपने मनपसंद कपड़े पहनती हैं तो उन्हें अपने व्यक्तित्व को समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का अवसर मिलता है।किशोरावस्था बाल्यावस्था से युवावस्था की ओर बढ़ने की अवस्था है। इस समय किशोरियां अपने आप को अन्य से अलग एवं विशिष्ट दिखाने की कोशिश करती हैं। फैशन के माध्यम से किशोरियों को अपनी रचनात्मक क्षमता को बढ़ाने,आत्म-छवि एवं पहचान बनाने के अच्छे अवसर मिलते हैं। फैशन से मॉडलिंग,डिजाइनिंग,ब्यूटीशियन परिधान डिजाइनिंग,मीडिया इत्यादि क्षेत्रों में रोजगार के अवसर किशोरियों के भविष्य के लिए सुनहरा अवसर प्रदान करती है ।

वर्तमान समय में इंटरनेट, विज्ञापन,सोशल मीडिया,कॉलेज, स्कूल ने फैशन को काफी अधिक लोकप्रिय बनाया है। जिससे युवा वर्ग बहुत जल्दी प्रभावित हो रहा है। किशोरावस्था के युवा अपनी पसंदीदा प्रभावशाली व्यक्तित्व के तौर-तरीकों को स्वयं अपनाने लगते हैं। इससे उनमें आधुनिकता की भावना आती है तथा वह आत्मविश्वासी बनते है । कभी -कभी किशोर आधुनिकता की दौड़ एवं फैशन की अति संवेदनशीलता के कारण अपनी वास्तविक परिस्थितियों एवं संस्कृतियों को भी भूल जाते हैं जिसके कारण नकारात्मक प्रभाव भी देखने को मिलते हैं। फैशन के सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही प्रकार के प्रभाव किशोरियों के जीवन में देखे जा सकते हैं।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 5.886|
Vol. 08 Issue 03, March- 2013
Available online at: https://livejimrjournal.in/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

व्यक्तित्व विकास पर फैशन की प्रभावशीलता- किशोरियों के व्यक्तित्व के विकास में फैशन बहुत महत्वपूर्ण एवं सकारात्मक प्रभाव डालती है। इसके माध्यम से किशोरियों में आत्मविश्वास उत्पन्न होता है।वह अपने व्यक्तित्व से संतुष्ट होती हैं और सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को सामंजस्य स्थापित करने में सहज महसूस कराती हैं। उचित एवं आकर्षक पहनावे के कारण किशोरियों में आत्मविश्वास एवं आत्म प्रस्तुति की सकारात्मक अभिव्यक्ति विकसित होती है। प्रचलित फैशन को अपनाकर युवा अपनी पहचान बनाने में सक्षम हो जाते हैं।

फैशन के माध्यम से किशोरियों को अपनी पसंद को चुनने,अपने विचारों को समाज के समक्ष प्रस्तुत करने,पहचान को अभिव्यक्त करने का अवसर मिलता है। फैशन सामाजिक पहचान तथा व्यक्ति के व्यवसाय को भी अभिव्यक्त करता है,जैसे-पुलिस की खाकी वर्दी,जलसेना की सफेद वर्दी,एयरफोर्स के आसमानी नीली वर्दी,डॉक्टर का सफेद रंग का कोट,वकील का काला कोट-पेंट आदि उनकी पहचान को प्रदर्शित करता है। आधुनिक फैशन को नियंत्रित तरीके से इसको अपनाना काफी प्रभावपूर्ण होता है।फैशन के माध्यम से सांस्कृतिक परम्पराओं को संजोकर रखा जा सकता है। विभिन्न प्रकार के भारतीय परिधान हमारी परंपरा और संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं।

फैशन युवाओं में संचार कौशल की क्षमता पर भी असर डालता है।अच्छे एवं आकर्षक पहनावे से मानव का व्यक्तित्व आकर्षित बनता है जिससे उसकी बातों से लोगों का ध्यान केन्द्रित होता है,लोग उनकी बातों को ध्यान से सुनते हैं ।फैशन से व्यक्ति के आत्म-विश्वास और आत्म-अभिव्यक्ति की क्षमता ही प्रबल होती है।फैशन को अपनाकर व्यक्ति मानसिक संतुष्टि एवं मानसिक प्रसन्नता का अनुभव करता है। अपनी इच्छानुसार वस्त्र पहनने से किशोरियों को सकारात्मकता का अनुभव होता है। फैशन के माध्यम से व्यक्ति तनावपूर्ण परिस्थितियों में भी मानसिक रूप से खुश रह सकता है।

किशोरावस्था में फैशन के प्रति आकर्षण प्राय:आर्थिक दबाव की स्थिति उत्पन्न कर देता है। फैशन के ट्रेंड बाली सभी वस्तुएं अक्सर महगीं होती हैं। फैशन में अधिक रुझान होने के कारण वह अपने अभिभावकों से प्रचलित शैली वाले वस्त्र,बैग,फुटवियर,चश्में,घडी तथा अन्य वस्तुओं की मांग करते हैं।यदि किसी कारणवश माता-पिता उनकी इच्छापूर्ति करने में सक्षम नहीं हो पाते हैं तो किशोर स्वयं को दूसरों की

अपेक्षा कम समझते हैं एवं तनाव व हीन भावना से भी ग्रसित हो जाते हैं। फैशन के प्रति अधिक झुकाव होने से किशोरियों का अध्ययन से ध्यान हटता है वह दिखावे की जिन्दगी जीना शुरू कर देते हैं।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि फैशन की व्यक्तित्व विकास,आत्म विश्वास में काफी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। इससे किशोरियों में आत्मविश्वास,आत्म-अभिव्यक्ति क्षमता तथा मानसिक संतुष्टि प्रभावित होती है। फैशन का बिना सोचे समझे अनुसरण करना किशोरियों के व्यक्तित्व पर नकारात्मक असर भी डाल सकता है । फैशन को संतुलित,सांस्कृतिक एवं गरिमामयी तरीके से अपनाने से व्यक्ति का मनोबल प्रबल होता है।फैशन व्यक्तित्व विकास को सकारात्मक एवं नकारात्मक रूप से प्रभाव डालती है। संतुलित फैशन को अपनाकर जीवन की दिशा संतुलित बनाए रखी जा सकती है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1-**फैशन,संस्कृति और युवा वर्ग – मल्होत्रा,अर्चना** (2012). **फैशन,संस्कृति और युवा वर्ग.जयपुर**:**पंचशील प्रकाशन।**

2-**फैशन टेक्नोलॉजी – कपूर,नीता** (2012),**फैशन टेक्नोलॉजी.जयपुर :आर.बी.एस.ए.पब्लिशर्स।**

3-**गृह-विज्ञान एवं जीवन शैली- जोशी,मीनाक्षी**(2011).**गृह विज्ञान एवं जीवन शैली.दिल्ली**: **क्लासिक पब्लिशिंग कम्पनी ।**

4-**फैशन डिजाइनिंग- चौधरी,रेखा** (2011).**फैशन डि।जाइनिंग.नई दिल्ली**: **दीप एंड दीप पब्लिकेशन।**

5-**फैशन और परिधान कला – वर्मा,ममता** (2010).**फैशन और परिधान कला .जयपुर :पॉइंटर पुब्लिशर्स ।**

6-**फैशन का समाजशास्त्र-गुप्ता ,नीलम** (2010).**फैशन का समाजशास्त्र .नई दिल्ली**:**रावत पब्लिकेशन ।**

7-**किशोरियों का मनोवैज्ञानिक विकास-त्रिपाठी**,**कमला**(2006).**नारी शिक्षा एवं व्यक्तित्व विकास**.**इलाहाबाद**: **हिंदी पुस्तक केंद्र ।**

8-**आधुनिक समाज एवं युवा –यादव** ,**एस.के.**(2005).**आधुनिक समाज एवं युवा**.**पटना** : **भारती भवन।**